जिनशासन की प्रभावना हेतु वर्तमान में संचालित पाठशालाओं को कैसे सुचारू एवं सारगर्भित रूप से चलाया जाये....

प्रस्तावना-पाठशाला क्या है ? पाठशाला एक साधन है सदाचार पालन कराने का,जैनधर्म के संस्कार देने का ,विवेकपूर्ण बनाने,अनुशासन जीवन में उतारने का, जिनधर्म की प्रभावना करने का, जैन का स्वरीप समझाने का, जिन का स्वरूप बताने का। पाठशाला केवल धर्म में ही आगे बढने का मार्ग नहीं है चूंकि इसमें बच्चों को आगे बढना सिखाते हैं ,आगे आकर बोलना सिखाते हैं, अनुशासन सिखाते हैं जबकि यह सब लौकिक में भी कार्यकारी होता है बस अन्तर इतना है कि यहाँ अ से अनार नहीं अनुशासन सिखाते हैं और आ से आम नहीं आदर करना सिखाते हैं इसप्रकार सदाचार,समता,वात्सल्य,प्रभावना के मार्ग पर ले जाने वाला एक जरिया वह पाठशाला कहलाती है।

पाठशाला का उद्देश्य- बच्चों को उचित शिक्षा के लिए, शुरू से ही धर्म की ओर ले जाने के लिए,उनको सदाचार सभ्यतापूर्ण जीवन का परिचय करवाने के लिए,पाँच पापों का ज्ञान कराने के लिए, चार गतियों का ज्ञान कराने के लिए,संस्कारित जीवन बनाने के लिए, उन्हे इस भव से तरने का मार्ग बताने के लिए, जैनधर्म के मूल तीन सिद्धांत(देवदर्शन,छना पानी,रात्रिभोजन त्याग)का मुख्यरूप से पालन करवाने के लिए, सत्पथ पर बढाने के लिए,जीवन में समता,संयम,त्याग,अनुशासन की भावना पैदा करने के लिए, हमारे मुनियों पर कैसे-कैसे उपसर्ग हुए हैं इनका ज्ञान कराने के लिए,हमारे विद्वान भूधरदासजी, बनारसीदासजी आदि सभी का ज्ञान कराने के लिए हमें बच्चों को पाठशाला जाने की प्रेरणा देना चाहिए।

अध्यापक की विशेषता-अध्यापक को मनोवैज्ञानिक होना चाहिए। उसे ज्यादा कठोर और ज्यादा नर्म न होकर समतल व्यवहार करना चाहिए जिससे बच्चे अनुशासनहीन भी न हों और भयभीत भी न हो। शिक्षकों को नियमों का पालन करने वाला होना चाहिए जिससे वे बच्चों को भी नियम पालन करने का कह पायें अन्यथा बच्चे उन नियमों का आप पर दोषारोपण कर स्वयं ही पालन नहीं करेंगे।ध्यापक बच्चों की शंकाओं का समाधान करने वाला होना चाहिए।अध्यापक स्वयं इतना शिक्षित होना चाहिए कि वह दूसरों को पढा सके,अन्य को शिक्षित करने में समर्थ हो क्योंकि जैसे नेत्रविहीन व्यक्ति मार्ग दिखाने में असमरेथ होता है वैसे ही अज्ञानी ज्ञान देने में असमरेथ होता है। शिक्षक रोचक कहानी सुनाकर बात को समझाये,उदाहरण से सिद्धांत की ओर ले जाये।हमारे इतिहासकार भी कहते हैं कि-

" गुरू सुश्रूषया जन्म चित्तं सद्धयान चिन्तया।

धनोपयोगः सत्पात्रे यस्य याति स पण्डितः।।"

शिक्षक समता धारण करने वाला होना चाहिए छोटी-छोटी बातों पर क्रोध न करता हो,जो बडों का आदर करता हो, जिसका पढाने का तरीका देख बच्चे स्वयं भागकर आ जायें।शिक्षक को विष्णुकुमार की तरह होना चाहिए जो उद्दण्ड बालकों को भी विद्वान बनाना जानता हो, शिक्षक का सक्रिय होना ही शिक्षक की शोभा होती है।

वर्तमान समय अनुसार किस पद्धति से बच्चों को पढाया जाये-

वर्तमान समय में बच्चों को पुस्तकों से पढना प्रिय नही लगता तथा उसमें लिखे शब्द समझ नहीं आते इसलिए बच्चों को practically पढाना चाहिए क्योंकि हम परस्पर में देखते हैं कि बच्चे लौकिक पढाई में ज्यादा interest लेते हैं पारलौकिक की अपेक्षा।वो इसलिए क्योंकि उन्हे लौकिक पढाई का practical करके बताया जाता है। यदि हम भी बच्चों को practically पढायें तो वे जरूर सीखेंगे जैसे-यदि ऐसा कहते हैं कि पानी में जीव हैं तो वे विश्वास नहीं करेंगे पर

यदि वही उन्हें माइक्रोस्कोप से दिखायें तो उन्हें विश्वास भी हो जाएगा और स्वतः ही बिना छना पानी काम में लेना छूट भी जाएगा। हम उन्हें खेल के माध्यम से भी सिखा सकते हैं जैसे-chess को दिखाकर बता सकते हैं कि इसमें पंचेन्द्रिय जीवों के घात का पाप लगता है कि घोडा मर गया, हाथी, ऊंट,सैनिक,राजा सभी को मारने का पाप लगता है,इसी में हम संज्ञी-असंज्ञी का स्वरूप भी समझा सकते हैं,पूरा सदाचार पालन करा सकते हैं।

<u>उपसंहार-</u> पाठशाला एकमात्र सदाचार ,समता , वात्सल्यादि का साधन है जिससे आगे जिनधर्म के संस्कार जाते हैं और उसमें पढाने वाला शिक्षक साधक क्योंकि वह सुचारू रूप से करता है परन्तु उनका मनोवैज्ञानिक होना अत्यावश्यक है क्योंकि यदि वह मनोवैज्ञानिक नही होगा तो बच्चों का विश्वास नहीं जीत पायेगा, जिनर्धम की प्रभावना में असमर्थ होगा,तथा नई-नई पद्धतियों से बच्चों को पढा नही पायेगा इसलिए अध्यापक का मनोवैज्ञानिक होना ही और पाठशाला के सदाचार ही जैनधर्म की प्रभावना में सुचारू रूप से व सारगर्भित रूप से चलाने में उत्कृष्ट है।

- शाश्वत अनुभूति जैन
शास्त्री प्रथम वर्ष
शाश्वतधाम उदयपुर
मो. 9928149886